मध्यकाल में शिक्षा व्यवस्था का स्वरूप

अल्का रानी – सहायक प्रोफेसर, इतिहास सामाजिक एवं मानविकी शिक्षा, विभागक्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, एनसीईआरटी, अजमेर.

Email - mailtoalkarani@gmail.com

सारांश : समाज के जो स्वरूप में जो बदलाव होता है वो आपसी समन्वय में सामने आता है। मध्यकालीन भारतीय इतिहास युद्ध, आक्रान्ता और अनाचार का युग माना जाता है। जहां पर 11 वीं सदी से लेकर 1707 तक तुर्क, मंगोल, खिलजी, पठान और मुगलो के साथ अरब की अनेक जातियां यहां समय–समय पर आक्रामक होकर या करवां बनकर भारत मे आबाद हुई। इससे पहले कि मै इस सांस्कृतिक प्रवाह की बात करूं पहले यह बताना जरूरी होगा की प्राचीन फारस सभ्यता के अवशेष बसरा और बगदाद की सांस्कृतियों में आबाद रहे। अपने भौतिक उत्थान के साथ बसरा और बगदाद धर्म, आध्यात्म और शिक्षा के प्रतिमान रहे। भारत मे इस्लाम के आगमन के साथ ही बसरा और बगदाद की शिक्षा प्रणाली भी यहां विकसित होने लगी। इस शोध पत्र मे परम्परागत भारतीय शिक्षा के साथ इस्लामिक शिक्षा के विकास के विभिन्न सोपानों का अध्ययन प्रस्तुत किया है। इस शोधपत्र में मध्यकालीन अरबी–फारसी हिन्दी ग्रंथो को संदर्भित किया गया है।

कुंजी शब्द: मध्यकाल, शिक्षा प्रणाली, भाषा, सिद्धांत.

प्रस्तावना :

किसी भी राष्ट्र का आधार वह शिक्षा होती है, जो उसके नागरिकों को प्रदान की जाती है। मध्यकाल में शासकों ने युद्धों में व्यस्त रहते हुए भी शिक्षा के विकास की तरफ पर्याप्त ध्यान दिया, किंतु उनकी शिक्षा मजहबी थी। डॉ. युसूफ हुसैन के शब्दों में, 'मध्ययुग में प्रत्येक बात को मजहबी दृष्टिकोण से सोचा जाता था। राजनीति दर्शन एवं शिक्षा पर मजहबी नियंत्रण था और मजहबी परिभाषाओं के अनुकूल बना दिया गया था, लोगों के सोचने एवं कहने का दृष्टिकोण भी मजहबी होता था।1 मध्यकाल में शिक्षण संस्थाओं के उद्देश्य और शैक्षिक प्रणाली इस प्रकार की है।

शिक्षा के उद्देश्य :

सर्वप्रथम इस्लामी शिक्षा का लक्ष्य मुसलमानों में ज्ञान की वृद्धि करना था। मुहम्मद साहब के अनुसार ज्ञान प्राप्त करना एक कर्त्तव्य है और उसके बिना मुक्ति नहीं मिल सकती।2 प्रत्येक मुसलमान पुरूष और स्त्री के लिये ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य है।3 दूसरा लक्ष्य इस्लाम का प्रसार करना था। भारत में इस्लाम का प्रसार शिक्षा के माध्यम से किया गया। मकतबो में बच्चों को प्रारंभ से कुरान पढ़ायी जाती थी, जिससे उन्हें इस्लाम के मलू सिद्धांतों के विषय में जानकारी हो सके। मुहम्मद साहब के अनुसार, ''विद्वान की स्याही शहीद के रक्त से अधिक पवित्र है।''4 तीसरा लक्ष्य इस्लामी सिद्धांतों के अनुसार सदाचार की एक विशिष्ट प्रणाली का विकास करना था।5 चौथा लक्ष्य भौतिक सुख प्राप्त करना था। इसका सबसे बड़ा दोष यह था कि यह लोगों को उच्च पद प्राप्त करने के लिए प्रलोभन देता था। यही कारण था कि मुस्लिम शासक विद्यार्थियों को प्रशासन में सिपहसालार, काजी, वजीर आदि पदों पर नियुक्त करते थे।6 अंत में, इस्लामी शिक्षा का लक्ष्य राजनैतिक उद्देश्यों और स्वार्थों से प्रेरित था। मुस्लिम शासकों के सामने विदेशी भूमि पर अपनी शासन–व्यवस्था, भव्यता और संस्कृति को सुदृढ़ करने की प्रमुख समस्या थी। वे शिक्षा के माध्यम से यह कार्य करना चाहते थे।7 मध्य युग शैक्षणिक कार्य प्रणाली, धर्माचार्यो और रहस्यवादियों के द्वारा नियंत्रित की जाती थी।8

शैक्षणिक संगठन:

प्रारंभिक शिक्षा (मकतब)

मकतब प्रारंभिक शिक्षा का प्रमुख स्थान था, जहाँ बच्चों को पढ़ाया जाता था।9 इस्लामी शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को वर्णमाला और धार्मिक प्रार्थना का ज्ञान कराना था। धनी वर्ग के लोग अपने बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा के लिए अलग से अध्यापकों की नियुक्ति करते थे, लेकिन उस क्षेत्र के जन साधारण मकतब में अपने बच्चों को भेजते थे। इसके अतिरिक्त खानकाह और दरगाहों में भी प्रारंभिक शिक्षा दी जाती थी। जब बालक 4 वर्ष, 4 महिने और 4 दिन का हो जाता था तो उसे शिक्षा देने की रस्म अदा की जाती थी, जिसे 'बिस्मिल्लाह' कहते थे।10 अच्छे वस्त्र पहनाकर एक कुर्सी पर बैठाकर बच्चे की शिक्षा शुरु की जाती थी। मकतबों में सभी वर्गों के लोग शिक्षा प्राप्त करते थे।3 विद्यार्थियों को फारसी भाषा का व्याकरण कण्ठाग्र कराया जाता था। वर्णमाला की लिपि फारसी होती थी, फिर भी उर्दू एक प्रमुख विषय था।11

उच्च शिक्षा (मदरसा)

मध्ययुग में उच्च शिक्षा मदरसों में दी जाती थी, जहां विद्वान विद्यार्थियों को व्याख्यान देते थे। मदरसों का संचालन राज्य सरकार के द्वारा होता था। जो विद्यार्थी मकतब की पढ़ाई पूरी कर लेते थे उन्हें मदरसे में प्रवेश मिलता था। उच्च शिक्षा को दो श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है 1. धर्म निरपेक्ष, 2.धार्मिक । पाठ्यक्रम 10 से 12 वर्ष का होता था। धर्म निरपेक्ष विषयों में अरबी व्याकरण, साहित्य, तर्कशास्त्र, ताबीयी रियाजी और विज्ञान, दर्शनशास्त्र, इतिहास, गणित, ज्योतिष, विधि, भूगोल, चिकित्सारशास्त्र आदि होते थे।12 शिक्षा का माध्यम अरबी था, यद्यपि औरंगजेब ने अरबी के स्थान पर मातृभाषा में शिक्षा देने के लिए बल दिया था।13 धार्मिक शिक्षा के अंतर्गत गहन अध्ययन कुरान पर टीका, पैगम्बर मुहम्मद साहब की परंपरा, इस्लामी कानून और कभी–कभी सूफी मत के सिद्धांत आते थे। प्रारंभ में धर्म निरपेक्ष शिक्षा पर मुहम्मद साहब ने बल दिया था, लेकिन भारत में मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना के बाद ऐसे धर्म परिवर्तित मुसलमानों के लिए धार्मिक शिक्षा देने की आवश्यकता समझी गई। इसलिये मदरसों के पाठ्यक्रम में धार्मिक शिक्षा सम्मिलित

की गई। अकबर के शासनकाल में इस पाठ्यक्रम में परिवर्तन किया गया, जिसमें हिन्दुओं और मुसलमानों को समान रूप से मदरसों में शिक्षा मिल सके। अकबर का विचार था कि हिन्दुओं को केवल इस्लामी शिक्षा देने से साम्राज्य की सुरक्षा को खतरा हो सकता है। इसीलिए उसने हिन्दुओं को उच्च–शिक्षा देने के लिए मदरसों की स्थापना की, जहाँ उन्हें हिन्दु–धर्म, दर्शन और साहित्य की शिक्षा फारसी भाषा के साथ–साथ दी जाती थी।14 औरंगजेब ने शिक्षा पद्धति के दोषों को दूर करने का प्रयास किया। उसे स्वयं अनुभव था कि उसके गुरु ने उसे उचित शिक्षा नहीं दी।15 इसीलिए वह चाहता था कि विद्यार्थी को जो शिक्षा दी जाय वह उपयोगी हो। वह इतिहास, भूगोल, युद्धकला, राजनीति, दर्शनशास्त्र और कूटनीति आदि विषयों के अध्ययन पर बल देता था। औरंगजेब का ध्यान राजकीय परिवार के सदस्यों को शिक्षित करने की तरफ अधिक था। उसने जन साधारण की प्रगति की तरफ ध्यान नहीं दिया। कानून की शिक्षा भी मदरसे में दी जाती थी। चिकित्सा के क्षेत्र में इस्लामी शिक्षा का स्तर गिरा हुआ था। संगीत की शिक्षा भी दी जाती थी। यह काफी लोकप्रिय थी।

शिक्षा प्रणाली:

मकतब में अधिकतर मौखिक शिक्षा दी जाती थी।16 अकबर ने शिक्षा पद्धति में परिवर्तन करना आवश्यक समझा। प्रचलित ढंग की शिक्षा से बालकों को वार्णमाला सीखने में बहुत अधिक समय लगा था। इसीलिए उसने शिक्षा में सुधार कर वैज्ञानिक ढंग से शिक्षा देने की पद्धति का विकास किया। इसकी विस्तृत जानकारी 'आईने अकबरी' से मिलती है।17 जिसके अनुसार प्रत्येक बच्चे को वर्णमाला का ज्ञान कराना चाहिए और उसका अभ्यास करना चाहिए । इसके बाद उसे कविताओं और ईश्वर प्रार्थना के गीत कंठाग्र कराना चाहिए । ऐसा करने से बालक एक महीने में उतना सीख लेगा जितना वह एक वर्ष में पढ़ता है।4 उच्च शिक्षा मदरसो में दी जाती थी। वह भी प्रायः मौखिक होती थी। अध्यापक व्याख्यान देते थे और विद्यार्थियों को किताबें पढने के लिए प्रेरित किया जाता था।18 विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षक व्यक्तिगत ध्यान देता था। फिर भी बौद्ध शिक्षा प्रणाली की तरह 'मानीटर' पद्धति प्रचलित थी। इस व्यवस्था के अंतर्गत शिक्षक की अनुमति से ऊँची कक्षा के विद्यार्थी निचली कक्षा के विद्यार्थियो को पढ़ाते थे परंतु अकबर इस व्यवस्था से संतुष्ट नहीं था, क्योंकि इससे बहुत समय नष्ट होता था। इस दोष को दूर करने के लिए प्राचीन भारतीय पद्धति का अनुसरण किया। जिन मदरसों में धर्म, तर्कशास्त्र, दर्शनशास्त्र और राजनीति जैसे विषयों की शिक्षा दी जाती थी वहां विश्लेषणात्मक तरीकों को प्रयोग में लाया जाता था। महत्वपूर्ण विषयों पर राजदरबारों के विद्वानों के बीच वाद–विवाद होता था। फिरोज तुगलक और अकबर के दरबार इस प्रकार के वाद–विवाद के लिए प्रसिद्ध थे।19 मध्यकाल में स्वाध्याय की पद्धति भी प्रचलित थी।20 मध्य युग में शिक्षा प्रणाली लचीली नहीं थी। यह अधिक कठोर और अनुत्पादक थी। इसकी सबसे बड़ी विफलता यह थी कि इसमें समयानुकूल परिवर्तन नहीं किया जा सकता था। मध्यकाल में प्रचलिम पाठ्यक्रम को ध्यान में रखते हुए मुल्ला निजामुद्दीन ने 18वीं शताब्दी में दर्स–ए–निजामी निश्चित किया तथा उनके अनुसार यह पाठ्यक्रम भारत में मुसलमानों के शासन के आरंभ से प्रचलित था। इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत ग्यारह विषय थे तथा प्रत्येक विषय के लिए अलग–अलग पुस्तकें थी –

1. सर्फ़ (विभक्तिकरण तथा पदों के रूप) – इसमें ये पुस्तकें पढाई जाती थी, मिजान, मुंशायब
2. नह्व (व्याकरण एवं वाक्य रचना) – इस विषय पर मान्य पुस्तकों में नह्व मीर, शरह–ए–माता आमिल, हिदायतुन नह्व, काफ़िया एवं शहर–ए–जामी।
3. मन्तिक (तर्कशास्त्र) – इस पर मान्य पुस्तकों में सुग़रा, कुबरा, इसाग़ोजी तहज़ीब, कुतबे मा मीर तथा सल्लाम–उल–उलूम।
4. हिकमत (दर्शन) – इस विषय पर मान्य पुस्तकों में मैबाज़ी, सद्रा तथा शम्स–ए–बज़ीगा।
5. रियाज़ी (गणित) – इस विषय पर मान्य पुस्तकों में खुलासत–उल–हिसाब, तहरीरे उकलेदस मकाल–ए–उला, तशरीह–उल–अफ़लाक, रिसाल–ए–क़ौशाजिया तथा शरहे चग़मानी बाब–ए–अव्वल।
6. बलाग़त (साहित्यशास्त्र) – इस विषय पर मान्य पुस्तकों में मुख्तसर मानी, मुतव्वल से मानी कुलतू तक।
7. फ़िक़ (न्यायशास्त्र) – शरहे वक़ाया अव्वलीन, हिदाया आख़िरीन आदि पुस्तकें मान्य थीं।
8. उसूल–ए–फ़िक़ (न्यायशास्त्र के सिद्धान्त) – इस विषय पर मान्य पुस्तकों में नुरूल अनवार, तौहीद तलवीह तथा मुसल्लिमस सुबूत।
9. क़लाम (तर्क विद्या) – इस विषय पर मान्य पुस्तकों में शरहे अक़ायद–ए–नसफ़ी, शरहे अक़ायद–ए–जलाली मीर ज़ाहिद, शरहे मवाक़िफ़ आदि थीं।
10. तफसीर (कुरान टीका)– इस विषय पर जलालैन, बैज़ावी आदि पुस्तकें मान्य थीं।
11. हदीस (परम्परायें) – इस विषय पर मिश्कात–अल–मसाबिह मान्य पुस्तक थीं।

दण्ड और पुरस्कार:

विद्यार्थियों को अपराध करने पर कठोर शारीरिक दण्ड दिया जाता था।22 राज्य की तरफ से इस संबंध में कोई विधान न रहने के कारण शिक्षक दण्ड देने में अपने विवेक से काम लेते थे।23 अनुशासन, सदाचार और विनम्रता विद्यार्थियों के विशेष गुण समझे जाते थे। इसका उल्लंघन करने पर उन्हें बेंत या कोड़े लगाने का दण्ड दिया जाता था।5

इसके विपरीत योग्य और प्रखर बुद्धि वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया जाता था। उन्हें 'सनद' और 'तमगा' सत्र के अंत में दिया जाता था।24 मदरसों से पढ़े हुए विद्यार्थियों को राज्य प्रशासन में ऊँचे पदों पर रखा जाता था। जिन विद्यार्थियों का उच्च पदों के लिए चयन हो जाता था उनके सिर पर 'अमामा' पगड़ी बाँधकर उनका विशेष सम्मान किया जाता था।25 मदरसे में परीक्षा पूरी कर लेने के बाद शैक्षणिक विशेषता की सनद दी जाती थी, जिसे 'दस्तरबंदी' कहते थे। शेख निजामुद्दीन औलिया ने जब अपनी शिक्षा पूरी कर लिया तो उनके गुरु मौलाना अलाउद्दीन उसीली ने औलिया के सिर पर पगडी बांधी। कुछ धनी वर्ग के लोग भी विद्यार्थियों को प्रोत्साहन देने के लिए वजीफे देते थे।

स्त्री शिक्षा:

मध्य युग में स्त्रियों की शिक्षा के लिए विधिवत कोई संस्थाएँ नहीं थी। स्त्रियाँ पुरुषों के साथ मकतबों और मदरसों में अध्ययन के लिए नहीं जा सकती थीं। लडकियाँ केवल उस क्षेत्र की मस्जिद से संलग्न मकतब में जाती थीं जिनका उद्देश्य साधारण ढंग से लिखना और पढ़ना होता था। इसीलिए मुस्लिम स्त्रियाँ शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ी थी। मुगल काल में स्त्री शिक्षा के लिए संस्थायें खोलने का प्रयास किया गया। राज परिवार और अभिजात वर्ग की स्त्रियों के लिए उनके घरों में पढने की सुविधाएँ थी। राज परिवार की कुछ स्त्रियाँ साहित्य और संगीत में कुशल थी। इल्तुतमिश की पुत्री रजिया एक विदुषी और रणकुशल महिला थीं। बाबर की पुत्री गुलबेदम

बेगम ने 'हुमायूंनामा लिखा। सलीमा, नूरजहाँ, मुमताज और जहाँआरा बेगम की साहित्य में विशेष रूचि थीं। औरंगजेब की पुत्री जेबुन्निसा अरबी और फारसी भाषाओं में पारंगत थीं एवं वह कवयित्री भी थी। उसने 'दीवाने मखफी' नामक पुस्तक लिखी।26

गुरु शिष्य संबंध:

इस्लामी शिक्षा पद्धति में गुरु का सम्मान किया जाता था। यद्यपि उनको वजीफा कम मिलता था, परंतु समाज के सभी वर्गों के लोग उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखते थे।27 गुरु अपने शिष्यों को अपने पुत्रों की तरह समझते थे और इस प्रकार उन्होंने प्राचीन भारतीय पद्धति को अपनाया।28 हमीद कलंदर ने लिखा है कि बदायूँ का मौलाना अलाउद्दीन उसूली सभी विद्यार्थियों को जो उनके पास जाते थे निःशुल्क शिक्षा देते थे, गुरु यद्यपि आर्थिक संकट में जीवन व्यतीत करते थे, फिर भी वे अपनी उस समय की आवश्यकता के अनुसार ही अनुदान स्वीकार करते थे।29 जियाउद्दीन बर्नी ने लिखा है कि मुहम्मद तुगलक अपने गुरु कुतलु खाँ का बडा सम्मान करता था।30 मध्य युग में परीक्षा की कोई नियमित प्रणाली नहीं थी। गुरु अपने शिष्य को उसकी योग्यता के अनुसार अगली कक्षा में प्रवेश दे देता था। शैक्षणिक विशिष्टता के प्रमाण पत्र विद्यार्थियों को उनकी रूचि के अनुसार दिये जाते थे, तर्क और तर्कशास्त्र में पारंगत विद्यार्थियों को फाजिल, धर्मशास्त्र में विशेष योग्यता प्राप्त करने पर 'आलिम' और साहित्य में ज्ञान प्राप्त करने पर 'काबिल' की उपाधियाँ दी जाती थीं।31 शिष्य के लिये गुरु की सेवा करना परम कर्त्तव्य माना जाता था।

छात्रावास:

छात्रावास केवल मदरसों में ही होते थे। मदरसे और छात्रावास के खर्च के लिए कभी–कभी बड़ी जागीरें सरकार द्वारा निर्धारित कर दी जाती थी। फिरोज तुगलक ने विशाल6 मदरसों का निर्माण कराया था।32 इब्नबतूता ने एक ऐसे मदरसे का उल्लेख किया है जिसके अंदर 300 कमरे थे, जहाँ विद्यार्थीगण प्रतिदिन कुरान का अध्ययन करते थे और उन्हें प्रतिदिन खाने और कपड़े के लिए भत्ता मिलता था। वहाँ के विद्यार्थियों को प्रतिदिन स्वादिष्ट – मुर्ग, चपातियाँ, पुलाव, खोर्मा और एक तश्तरी मिठाई दिया जाता था।33 प्राचीन काल के आश्रमों और बौद्धविचारों की अपेक्षा मध्य युग में छात्रावास का जीवन अधिक सुविधाजनक था तथा कठोर अनुशासन भी नहीं था।

शिक्षा के प्रमुख केन्द्र:

मध्यकाल में कोई नगर शिक्षा का एक महत्वपूर्ण केन्द्र तभी बन सकता था, यदि वह मुस्लिम शासक की राजधानी हो या किसी जागीरदार, प्रशासक या विशिष्ट अमीर का निवास स्थान हो। धार्मिक महत्व के स्थान दरगाह, खानकाह भी शिक्षा के केन्द्र बन गये।34 इस प्रकार आगरा, इलाहाबाद, फतेहपुरसीकरी, दिल्ली, जौनपुर, लाहौर, मुल्तान, अजमेर, बीजापुर, अहमदाबाद, इस्लामी शिक्षा के प्रमुख केन्द्र बन गये।35 मध्यकाल में आगरा शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था। सिकंदर लोदी ने वहाँ सैकड़ों मदरसों की स्थापना की। अरब, ईरान और बुखारा के बहुत से विद्वान यहाँ आये और उन्हें राजकीय संरक्षण मिला।36 अकबर के शासनकाल में आगरा इस्लामी शिक्षा, संस्कृति, कला और दस्तकारों का महत्वपूर्ण केन्द्र बना। दिल्ली मुस्लिम शासकों की राजधानी रही। मुस्लिम शासकों ने इसे शिक्षा का प्रमुख केन्द्र बनाने का प्रयास किया। नसिरूद्दीन महमूद ने नासिरिया मदसरे की स्थापना की। अलाउद्दीन के समय में बहुत से विद्वान और दार्शनिक दिल्ली आये। फरिश्ता ने लिखा है कि 43 प्रख्यात विद्वान अलाउद्दीन द्वारा स्थापित मदरसों में पढ़ाने के लिए नियुक्त किये गये।37 फिरोज तुगलक ने यहाँ 30 मदसरों की स्थापना की।38 मुगल काल में हुमायुँ ने भगू ोल और नक्षत्रशास्त्र के अध्ययन के लिए यहां एक मदरसा स्थापित किया। सन् 1561 में माहम अंगा ने एक मदरसा खोला। दिल्ली सुल्तानों के शासनकाल में जौनपुर इस्लामी शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था।39 इब्राहीम शर्की ने शिक्षा के विकास के लिए काफी योगदान दिया।40 शेरशाह सूरी ने यहाँ

शिक्षा प्राप्त की। इसी प्रकार बीदर भी शिक्षा के लिए अधिक प्रसिद्ध था। महमूद गवां ने एक मदरसा स्थापित किया।41 बीदर में शिक्षा के विकास के कारण बहमनी राज्य में शिक्षा का स्तर काफी ऊँचा हो गया था। पंजाब नक्षत्र शास्त्र और गणित, दिल्ली इस्लाम की परंपराओं, रामपुर तर्कशास्त्र और चिकित्साशास्त्र और लखनऊ सदाचार की शिक्षा के लिए प्रसिद्ध थे। इस्लाम की उच्च शिक्षा अरबी में और हिन्दू धर्म की संस्कृत में दी जाती थी।

मध्ययुगीन शिक्षा प्रणाली के गुण दोष:

इस्लामी शिक्षा ने धर्म निरपेक्ष और धार्मिक शिक्षा में सामंजस्य स्थापित किया।42 इस्लाम दूसरे संसार के सिद्धांत में विश्वास नहीं करता इसलिए इसने भौतिक और सांसारिक सुखों पर अधिक महत्व दिया। इस्लामी शिक्षा की एक और विशेषता यह थी कि साहित्य और इतिहास लेखन को प्रोत्साहन मिला। इस युग में बहुत से ऐतिहासिक ग्रंथों का निर्माण हुआ। मुसलमानों के भारत में आने के पहले देश का क्रमबद्ध इतिहास नहीं मिलता। केवल कल्हण की राजतरंगिणी इतिहास की श्रेणी में रखी जा सकती है। मुस्लिम शासकों ने इतिहास को आत्मकथाओं के रूप में

लिखा और विशिष्ट इतिहासकारों को संरक्षण प्रदान किया। प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति की तरह इस्लामी शिक्षा प्रणाली में भी गुरु और शिष्य के संबंध बहुत निकट थे। इस्लामी शिक्षा प्रणाली का मुख्य दोष यह था कि इसमें भौतिकवाद पर अधिक बल दिया गया और अध्यात्मवाद की अवहेलना की गई। इस्लामी शिक्षा संस्थाओं में फारसी और अरबी7 भाषाओं की प्रधानता थी, जिसके कारण क्षेत्रीय भाषाओं का विकास न हो सका। इस शिक्षा प्रणाली में स्त्रियों को अलग रखा गया क्योंकि पर्दा प्रथा के कारण वे अपने घरों से बाहर नहीं निकल सकती थी। इस शिक्षा पद्धति में स्वाध्याय और मौलिकता के लिए कोई स्थान नहीं था।

निष्कर्ष:

प्रारंभ में मध्ययुगीन शिक्षा प्रणाली राजनैतिक उद्देश्यों से अभिप्रेरित थी परंतु धीरे–धीरे उसमें ठोस परिवर्तन हुये, जिसका उद्देश्य ज्ञान प्राप्त करना था। हिन्दू और मुस्लिम दोनों वर्गों ने इसको समान रुप से ग्रहण किया। मध्यकाल मे ं देश की सभी शिक्षण संस्थाओं में पाठ्यक्रम तथा शिक्षा पद्धति लगभग एक ही प्रकार की थी। परंतु विभिन्न शासकों के समय इनमें कुछ परिवर्तन हुआ, जैसे फिरोज तुगलक, अकबर, औरंगजेब, आदि। जिन्होंने शिक्षा के व्यावसायिक स्वरूप की ओर ध्यान दिया।

संदर्भ:

1. डॉ एस. एल. नागौरी, श्रीमती कांता नागौरी, मध्यकालीन भारत का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक इतिहास, पृ 94
2. ए ई कीय, आपसिंह, पृ 107, ए. रसीद, सोसायटी एंड कल्चर इन मेडिवल इण्डिया, कलकता, 1969, पृ. 150
3. पी. एल. रावत, हिस्ट्री ऑफ इण्डियन एजूकेशन, आगरा, 1956, पृ. 84
4. एस. एम. जाफर, ऐजूकेशन, पृ. 4
5. पी. एल. रावत, आपसिट, पृ. 85
6. एम. एम. जाफर, ऐजूकेशन पृ. 4
7. पी. एल. रावत, आपसिट, पृ. 85
8. ए. एल. रशीद, आपसिट, पृ. 150
9. पी. एल. रावत, आपसिट, पृ. 91–92
10. ए.रशीद, आपसिट, पृ. 150
11. पी. एल. रावत, आपसिट, पृ. 93
12. एफ. ई. कीय, आपसिट, पृ 119
13. पी. एल. रावत, आपसिट, पृ. 94
14. एफ. ई. कीय, आपसिट, पृ 129
15. क्विन क्विनीयल रिव्यू ऑफ एजूकेशन इन इण्डिया, पृ. 272
16. आईने अकबरी, जिल्द 2, आइन 25, उद्धृत युसुफ हुसैन, आपसिट, पृ. 79
17. एस. एम. जाफर, ऐजूकेशन, पृ. 20
18. पी. एल. रावत, आपसिट, पृ. 99
19. एफ. ई. कीय, आपसिट, पृ 136
20. डॉ. लईक अहमद, मध्याकालीन भारतीय संस्कृति पृ. 54–55
21. एस. एम. जाफर, कल्चरल ऐस्पेक्ट्स, पृ. 81
22. पी. एल. रावत, आपसिट, पृ. 99
23. एस. एम. जाफर, कल्चरल ऐस्पेक्ट्स, पृ. 81
24. एस. एम. जाफर, ऐजूकेशन, पृ. 4
25. एडवर्डस एण्ड गैरेट, आपसिट, पृ. 233
26. एस. एम. जाफर, ऐजूकेशन, पृ. 4
27. पी. एल. रावत, आपसिट, पृ. 103
28. खैरूल मजलिस, पृ. 190
29. जियाउद्दीन बर्नी, पृ. 506
30. युसुफ हुसैन, पृ. 92
31. एस. एम. जाफर, ऐजूकेशन, पृ. 51
32. पी. एल. रावत, आपसिट, पृ. 105
33. पी. एल. रावत, आपसिट, पृ. 111
34. एफ. ई. कीय, आपसिट, पृ 148
35. एस. एम. जाफर, ऐजूकेशन, पृ. 57–58
36. फरिश्ता, जिल्द 1, पृ. 462
37. वही, 464–465
38. एन, एन, ला, आपसिट, पृ. 31–113
39. एफ. ई. कीय, आपसिट, पृ 148
40. एस. एम. जाफर, ऐजूकेशन, पृ. 121–126
41. पी. एल. रावत, आपसिट, पृ. 116
42. एस. एम. जाफर, ऐजूकेशन, पृ. 9–10
43. एस. एम. जाफर ऐजूकेशन, पृ. 8

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. डॉ. झारखण्डे चौबे एवं डॉ. कन्हैयालाल श्रीवास्तव, मध्ययुगीन भारतीय समाज एवं संस्कृति, उत्तरे प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ
2. डॉ. लईक अहमद, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
3. बी. पी. सक्सेना, हिस्ट्री ऑफ शाहजहां ऑफ देहली
4. एफ. ई. कीय, ए हिस्ट्री ऑफ एजूकेशन इन इण्डिया एण्ड पाकिस्तान।